इकाई–6

अपठित गद्यांश/अपठित काव्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांशों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1) मानव का अकारण ही मानव के प्रति अनुदार हो उठना न केवल मानवता के लिये लज्जाजनक है वरन् अनुचित भी है। वस्तुत: यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है। केवल इसलिए कि कोई मनुष्य बुद्धिहीन है अथवा दरिद्र, वह घृणा का तो दूर रहा उपेक्षा का भी पात्र नहीं होना चाहिए। मानव तो इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह मानव है, भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

प्रश्न– (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– मानवता का आदर।

(2) यथार्थ मनुष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर– मानवता का आदर करना जानते हो एवं कर सकते हो।

(3) उपर्युक्त गद्य का सारांश लिखिए।

उत्तर– भगवान ने मानव की सर्वश्रेष्ठ रचना की है जिसमें उसमें मानवता का गुण समाहित है। मानव में दरिद्र या बुद्धिहीन होने पर भी घृणा का पात्र नहीं होना चाहिए।

(2) आप हमेशा अच्छी जिंदगी जीते आ रहे हैं। आप हमेशा बढ़िया कपड़े, बढ़िया जूते, बढ़िया घड़ी, बढ़िया मोबाईल जैसे दिखावों पर बहुत खर्च करते हैं। आप अपने शरीर पर कितना खर्च करते हैं? इसका मूल्यांकन जरूरी है। यह शरीर अनमोल है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो आप ये सारे सामान किस पर टांगेंगे? अतष स्वयं का स्वस्थ रहना सबसे जरूरी है एवं स्वस्थ रहने में हमारे खान–पान का सबसे बड़ा योगदान है।

प्रश्न–(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तर– स्वस्थ शरीर।
(2) अनमोल क्या है ?
उत्तर– शरीर अनमोल है।
(3) शुद्ध, असली शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
उत्तर– शुद्ध – अशुद्ध
असली – नकली
(3) आदर्श व्यक्ति कर्मशीलता में ही अपने जीवन की सफलता समझता है। जीवन का प्रत्येक क्षण वह कर्म में लगाता है। विश्राम और विनोद के लिए उसके पास निश्चित समय रहता है। शेष समय जन सेवा में व्यतीत होता है। हाथ पर हाथ धर कर बैठने को वह मृत्यु के समान समझता है। काम करने की उसमें लगन होती है। उत्साह होता है। विपत्तियों में भी वह अपने चरित्र का सच्चा परिचय देता है। धैर्य की कुदाली से वह बड़े–बड़े संकट पर्वतों को ढहा देता है। उसकी कार्यकुशलता देखकर लोग दाँतों तले ऊँगली दबाते हैं। संतोष उसका धन है। वह परिस्थितियों का दास नहीं है। परिस्थितियाँ उसकी दासी हैं।
प्रश्न–(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तर– आदर्श व्यक्ति की कर्मशीलता ।
(2) उपर्युक्त गद्यांश में वर्णित व्यक्ति के गुणों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर–उपर्युक्त गद्यांश में आदर्श व्यक्ति की कर्मशीलता में ही जीवन की सफलता है। आदर्श व्यक्ति हमेशा अपने कर्म में लगा रहता है एवं उसी में उसका विश्वास रहता है।
(4) देश प्रेम में आत्म विस्तार का भाव निहित है। जिस भाव के अंतर्गत व्यक्ति परिवार और समाज की परिधि से भी आगे अपने देश के प्रति अपना लगाव अनुभव करने लगता है, उस भाव को देश प्रेम के अंतर्गत परिगणित किया जाता है। देश प्रेम में देश की रक्षा और देश के विकास को महत्व दिए जाने के साथ देश के प्रति पूज्य भाव का संचार भी सम्मिलित होता है। जब तक व्यक्ति देश को अपना आराध्य नहीं बनाता, तब देश के प्रति समर्पण का भाव भी उसमें जाग्रत नहीं होता।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) देश के प्रति समर्पण का भाव कब जाग्रत होता है?
(3) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(5) राष्ट्रीय भावना में शौर्यवान का अपना विशिष्ट स्थान है। राष्ट्र गौरव का बखान और उसकी रक्षा का प्रबल भाव जिस कविता में व्यक्त होता है, उस वीर भाव को शौर्य के अन्तर्गत गिना जाता है। शौर्य का भाव आत्मगौरव से परिपूर्ण होता है। हिन्दी कविता के सुदीर्घ इतिहास में इस भाव की प्रक्रिया प्राय: सभी युगों में होती रही है। आदिकाल से आधुनिक युग तक किसी न किसी रूप में शौर्य और देशप्रेम का भाव जाग्रत रहा है।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) शौर्य भाव क्या है?
(3) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित काव्यांशों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
(1) वीरों का कैसा हो बसंत?
आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार–बार
प्राची, पश्चिम, भू–नभ उपार,
सब पूछ रहे हैं दिग् दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) वीरों का बसंत कैसा होना चाहिए?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
(2) मैंने छुटपन से छिपकर पैसे बोए थे
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रूपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल–फलकर, मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गए।
मैं हताश हो, बांट जोहत रहा दिनों तक
बाल कल्पनाउके अपलक पाँवड़े बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोंपा था, तृष्णा को सींचा था।

(1) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) कवि ने पैसों के पेड़ से क्या कल्पना की है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
(3) युवक नहीं जो देख संकटों को डर जाता,
यह चकोर ही नहीं कि जो अंगार न खाता।
बलिदानों का पंथ नहीं जिसने पहचाना,
कह देगा यह कौन कि वह भी परवाना।
उक्त रक्त की धार जवानी माँग रही है।
वीरोचित शृंगार जवानी माँग रही है।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) बलिदान कौन देता है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
(4) तुम हो धरती के पुत्र न हिम्मत हारो।
श्रम की पूँजी से अपना काज़ सँवारों।
श्रम की सीपी में जब मोती बनता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।
मिट जाता है फिर दैन्य स्वयं की क्षण में।
वीरोचित शृंगार जवानी माँग रही है।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) बलिदान कौन देता है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
(5) तुम हो धरती के पुत्र न हिम्मत हारो।
श्रम की पूँजी से अपना काज सँवारों।।
श्रम की सीपी में जब मोती बनता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।।
मिट जाता है फिर दैन्य स्वयं की क्षण में।
छा जाती है नवदीप्तिधरा के कण में।
जागो–जागो तुम श्रम से नाता जोड़ो।
पथ चुनो कर्म का अलस भाव सब छोड़ो।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) श्रम का क्या महत्व है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।
(6) पूर्व चलने के बहोही
बाट की पहचान कब ले।
पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इनकी कहानी,
छाल इनका ज्ञात होता
है न औरों की जवानी,
अनगिनत राही गए इस
राह से, उनका पता क्या
पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी।
प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) चलने के पूर्व बटोही को क्या करना चाहिए?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें। ❑